शिष्यता के अनिवार्य तत्व

अनिवार्य शिक्षाएं

पारिवारिक जीवन

अध्याय 1 : परिवारों के लिए परमेश्वर की योजना

हम बहुत सी प्रसिद्ध प्रेम कथाओं और कथनों के कहते हुए सुनते हैं ' और उसके बाद उन्होंने एक सुःखद जीवन व्यतीत किया'। जिसके परिणाम स्वरूप हम यह सोचने लगते हैं कि विवाह का अभिप्राय हमें सदैव प्रसन्न रखना है। क्या यह सच है? तलाक सम्बन्धी वर्तमान आंकड़े हमें बताते हैं कि विवाह लोगों को प्रसन्न रखने में असफल हो रहे हैं। एक मसीही होने के नाते हमें विवाह की भूमिका व उद्देश्य को किस नज़रिये से देखना चाहिए?

दूसरे विषयों के समान हमें, विवाह के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए संसार के ज्ञान या समझ पर निर्भर होने की बजाय बाइबल में उसकी सही शिक्षाओं की खोज करनी चाहिए। परमेश्वर का वचन हमें परिवारों के प्रति परमेश्वर की योजना के बारे में बताता और बताता है कि उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए हम क्या कर सकते हैं।

परमेश्वर ने मसीह (दुल्हे) और कलीसिया (दुल्हल) को प्रगट करने के लिए विवाह के अन्तर्गत एक पुरूष व एक स्त्री को चुना।

हमारे जीवन से जुड़ी सारी बातों को हमारी भलाई और परमेश्वर की महिमा के लिए बनाया गया है। इसलिए यह विचार करना कि विवाह इस उद्देश्य को छोड़ और किसी उद्देश्य के लिए बनाया गया है, एक बड़ी भूल है। हमारे परिवार को हमारी भलाई (इस मतलब हमेशा खुशी नहीं है) और परमेश्वर की महिमा के लिए बनाया है। हम अकेले में किस प्रकार परमेश्वर का इन्तज़ार करते हैं या विवाहित जीवन में हमारे कामों से परमेश्वर को महिमा मिलनी चाहिए या उसका उददेश्य पूरा होना चाहिए, हमारी स्वार्थी इच्छाएं नहीं।

परमेश्वर ने प्राथमिक तौर पर विवाह को हमें खुश रखने के लिए नहीं बनाया, हालांकि विवाह में बहुत हद तक आनन्द पाया जाता है! इसके बजाय परमेश्वर ने विवाह का निर्माण मसीह व कलीसिया की तस्वीर को प्रस्तुत करने के लिए बनाया हैः अर्थात उसके छुटकारे की कहानी को बताने के लिए बनाया है। इसलिए हमें विवाह, और विवाह में हमारी भूमिका को इस तरह से देखना और इसका इन्तज़ार करना चाहिए, जैसे कि हम इसके द्वारा संसार में मसीह की तस्वीर को प्रगट कर रहे हैं या उसकी महिमा कर रहे है, बजाय यह कि हम विचार करें कि किस प्रकार हम अपने विवाहित जीवन को व्यतीत कर सकते हैं या किस तरह इस सम्बन्ध के द्वारा हमारा अकेलापन दूर हो सकता है।

परमेश्वर के वचन को अपना मार्गदर्शक मानते हुए, आइये हम परमेश्वर द्वारा तैयार की गयी तस्वीर व उसकी योजनाओं को समझने के लिए निम्नलिखित वचनों पर ध्यान दें।

परमेश्वर ने मसीह (दुल्हे) और कलीसिया (दुल्हल) को प्रगट करने के लिए विवाह के अन्तर्गत एक पुरूष व एक स्त्री को चुना। इफिसियों 5:22–30 इस तस्वीर को बनाता और मसीह के उदाहरण से दिये गये निर्देशों का पालन करने के लिए कहता है। 'हे पत्नियो, अपने अपने पति के ऐसे अधीन रहो जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है और स्वयं ही देह का उद्धारकर्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के अधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के अधीन रहें। हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया, कि उसको वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध करके पवित्र बनाए, और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो वरन पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है कि पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के सामान प्रेम रखे। जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है वह अपने आपे से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन उसका पालन–पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इसलिए कि हम उसकी देह के अंग हैं।''

जैसा कि हमने पिछले अध्यायों में सीखा था, कि मसीहियों को सुसमाचार सुनाने व शिक्षा प्राप्त करने के लिए बुलाया गया है। इसी तरह परिवार के लिए भी एक लक्ष्य निर्धारित किया गया है। आइये हम समानान्तर रूप में साथ साथ चलने वाले निर्देशों व आशीषों को देखें : 'तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया,अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया; नर और नारी करके उसने मनुष्यों की सृष्टि की। और परमेश्वर ने उनको आशीष दी, और उनसे कहा, 'फूलो –फलो, और पृथ्वी में भर जाओ, और उसको अपने वश में कर लो; और समुद्र की मछलियों, तथा आकाश के पक्षियो, और पृथ्वी पर रेंगने वाले सब जन्तुओं पर अधिकार रखो।'(उत्पत्ति 1:27–28) '' यीशु ने उनके पास आकर कहा,'' स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिए तुम जाओ,सब जातियों के लोगों को चेला बनाओं और उन्हे पिता, और पुत्र और पवित्र आत्मा के नामे से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बाते जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है मानना सिखाओः और देखो मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। (मत्ती 28:18–20) अविवाहितों और उन विवाहितों के लिए यह बातें सुनने में ज़रूर आराम दायक लगेंगी जिनके बच्चे नहीं हो सकते। परमेश्वर ने केवल विवाहित या बाल बच्चे वाले विवाहित परिवारों को ही फलने फूलने और पृथ्वी पर भर जाने के लिए नहीं कहा। नहीं। परमेश्वर चाहते है कि कलीसिया अपनी वैवाहिक स्तर की परवाह किये बिना ही परमेश्वर द्वारा फलवन्त होने और बढ़ने की बुलाहट को पहचान सकें।

बच्चों वाले परिवार को शिष्य बनाने से नहीं रोका गया है और न ही किसी बांझ स्त्री को आत्मिक बच्चे जनने से। परमेश्वर अपने राज्य को बढ़ाने के लिए परिवारों का इस्तेमाल करते हैं। परमेश्वर अपने राज्य को बढ़ाने के लिए कलीसिया के लोगों को इस्तेमाल करते हैं। दोनो ही बहुत महत्वपूर्ण हैं, और दोनो ही बातें हमारी भलाई और उसकी महिमा के लिए हैं।

परमेश्वर की इच्छा के अनुसार, विवाह की वाचा हमारे प्रति परमेश्वर की अनन्त विश्वासयोग्यता की तस्वीर है। मरकुस 10:7–9 में लिखा है, ''इस कारण मनुष्य पने माता–पिता से अलग होकर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे; इसलिए वे अब दो नहीं पर एक तन हैं। इसलिए जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है उसे मनुष्य अलग न करे।'' यह एक आजीवन काल की वाचा है। अब हम उस वाचा को देखते हैं जो उसने कलीसिया के साथ बांधी हैः ''और तेरे आगे आगे चलने वाला यहोवा है; वह तेरे संगे रहेगा और न तो तुझ धोखा देगा और न छोड़ देगा; इसलिए मत डर और तेरा मन कच्चा न हो।''(व्यवस्थाविवरण 31:8) तथा यिर्मयाह 31:3 में लिखा है ''मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हूँ; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करूणा बनाए रखी है।'' जब हम अपने विवाहित सम्बन्धों को मज़बूत बनाए रखते हैं और छोटी छोटी सी बातों पर संसार द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला आसान तरीके अर्थात तलाक का इस्तेमाल नहीं करते, तो हम मसीह व कलीसिया के बीच बंधी अनन्त वाचा को प्रदर्शित करते हैं। और जब हम अविवाहित दशा में धीरज और आनन्द के साथ में इन्तजार करते हैं तो इससे प्रदर्शित होता है कि हम विश्वास करते हैं कि विवाह एक उत्तम वाचा को प्रगट करता है, और वह वाचा पहले ही से हमारे लिए है।

बाइबल हमें एक कहानी को बयान करती है : मसीह के प्रेम के छुटकारे की कहानी। विवाह और परिवार कुछ तरीकों में से एक तरीका है जिसके द्वारा परमेश्वर अपनी कहानी को बताता है। जब आप इन तस्वीरों को ध्यान में रखते हुए परमेश्वर के वचनों को पढ़ते हैं तो आप एक मुख्य विषय को देख पाऐंगे जो इन सारी बातों के द्वारा उसकी कहानी को प्रगट करता व उसकी योजना को पूरा करता है।

इस महान सच्चाई पर ध्यान देने पर हमें पता चलता है कि हम किस तरह से अपना पारिवारिक जीवन व्यतीत करें जिससे हमारी भलाई (हमारी ईश्वरीयता) और उसकी महिमा में बढ़ौतरी हो सके।

अविवाहितों और उन विवाहितों के लिए यह बातें सुनने में ज़रूर आराम दायक लगेंगी जिनके बच्चे नहीं हो सकते। परमेश्वर ने केवल विवाहित या बाल बच्चे वाले विवाहित परिवारों को ही फलने फूलने और पृथ्वी पर भर जाने के लिए नहीं कहा। नहीं। परमेश्वर चाहते है कि कलीसिया अपनी वैवाहिक स्तर की परवाह किये बिना ही परमेश्वर द्वारा फलवन्त होने और बढ़ने की बुलाहट को पहचान सकें। बच्चों वाले परिवार को शिष्य बनाने से नहीं रोका गया है और न ही किसी बांझ स्त्री को आत्मिक बच्चे जनने से।

सुर्खियां

- बाइबल में बहुत सी ऐसी तस्वीरें पायी जाती है जो हमें संसार के प्रति परमेश्वर के उद्देश्य के बारे में बताती है। विवाह, अकेलापन और परिवार उन तस्वीरों में से कुछ हैं।

- परमेश्वर के वचन के आधार पर जब हम अपने पारिवारिक जीवन में भूमिका निभाते हैं तो संसार के सामने परमेश्वर का सही चरित्र प्रगट होता है।

- हमारे लिए उसकी योजना हमें सिर्फ खुश रखने की ही नहीं है। हमारे जीवन के लिए परमेश्वर की प्राथमिक योजना हमारी भलाई व उसकी महिमा है। इन बातों को अपने ध्यान में रखने से हमारे पारिवारिक जीवन को संतोष, धीरज और आनन्द से व्यतीत करने में मदद मिलती है।

अब आप बताएं

- मसीह और कलीसिया के रिश्ते को ध्यान में रखने से आपके वर्तमान विवाहित जीवन(या विवाह के लिए इन्तज़ार करने पर) पर क्या प्रभाव पड़ेगा? जब आप उसकी आज्ञाओं का पालन करने की कोशिश करते है तो परमेश्वर से उसके दृष्टिकोण देने के लिए प्रार्थना करें।

- उन बातों पर ध्यान दें जिन्हें संसार बढ़ावा देता है। क्या आप इन संदेशों में आत्म–सन्तुष्टि व स्वार्थ को देख पाते हैं? बाइबल पर आधारित परमेश्वर की महिमित योजना के बिल्कुल विपरीत, इस संसार की शिक्षा बहुत छिछली और बेमेल नज़र आती है। परमेश्वर से प्रार्थना करें कि आपके जीवन या रिश्तों में पाये जाने वाले हर उस क्षेत्र को प्रगट करे, जिस में आपने संसार की बातों को प्राथमिकता दी हो– बार बार प्रार्थना में याद रखने के लिए आप उन्हें लिख लें। प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपके हृदय को बदले और आज ही से उसकी योजना को समझने में आपकी सहायता करे।

- आपके जीवन जीने का ढंग किस प्रकार दूसरों के सामने परमेश्वर के उद्देश्य को प्रगट कर सकता है? आप संसार के सामने विवाह के क्षेत्र में परमेश्वर की योजना को किस प्रकार प्रकट कर सकते हैं?

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing